नवादा जिला के आर्थिक विकास में वाणिज्य बैंकों की भूमिकाः एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 ललित सागर*
निरंजन कुमार भारती*

यह सर्वविदित है कि विकास की सतत् प्रक्रिया भौगोलिक अवधारणाओं के बिना अधूरी प्रतीत होती है। वास्तव में विकासात्मक अवधारणाएँ परिक्षेत्र में ही पल्लवित–पुष्पित होती हैं और यही मानवीय जीवन की सद्गति को भी परिलक्षित करती है। आर्थिक और क्षेत्रीय विकास के लिए स्थलाभूमि कारक के रूप में महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों को अपनाकर ही विकास के अन्यान्य उपागमों को पूरा किया जा सकता है।

भूगोल एक ऐसा क्षेत्र है, जो स्थानीय विविधताओं का विश्लेषण किसी प्रदेश और स्थानिय संबंधों के अनुसार करता है। यह एक विशेष स्थिति के मौजूदा स्थानियक चर की सीमा है जो कि काफी व्यापक है। इन चरों की सीमा मिट्टी, भूमि, पानी, जलवायु आदि जैसी भौतिक घटनाओं से लेकर व्यक्ति, संस्कृति, अर्थव्यवस्था आदि जैसे जटिल परिसरों तक हो सकती है। भूगोल में आधुनिक प्रवृति ने भी स्थानिय चर के रूप में आर्थिक गतिविधि को शामिल किया है। जैसे, आर्थिक गतिविधियों और विकास के बीच संबंधों का भौगोलिक विश्लेषण जो अन्य स्थानिक चर बनता है, अध्याय प्रासंगिक हो जाता है और भूगोल के परिक्षेत्र के व्यापक अवधारणाओं की परिद्यि में आ जाता है। किसी विशेष गतिविधि का विकास और विस्तार एकाएक नहीं हो सकता, बल्कि यह विभिन्न भौतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों से घिरा है। ये सभी कारक, वास्तव में, भौगोलिक चर हैं। भौगोलिक चर के रूप में, परिणाम स्वरूप आए आर्थिक गतिविधि का भी पालन करना काफी तर्कसंगत है।

आर्थिक गतिविधि शून्य में घटित नहीं हो सकते हैं। वे भी भौगोलिक अवयन के लिए स्थानिक चर है। यह किसी भी क्षेत्र में किसी विशेष आर्थिक गतिविधि के अलग–अलग स्थानों को जानना बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए बैंको का स्थान, आधुनिक युग में एक बहुत महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। विकास के उद्देश्य से यह महत्वपूर्ण है और उनके स्थानिक वितरण सीधे क्षेत्र

***विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, हर प्रसाद दास जैन महाविद्यालय, आरा**
***शोधर्थी भूगोल विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा**

में विकास की गति को प्रभावित करते हैं। इसके अलावा बैंक की दक्षता भी इसके स्थान पर काफी निर्भर करती है। आर्थिक गतिविधि का विश्लेषण इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है यह राज्य की नीतियों के निर्माण में मदद करता है, और इनके द्वारा भविष्य के विकास आर्थिक और क्षेत्रीय योजनाओं के लिए और अधिक बुद्धिमान योजनाएं संचालित की जा सकती हैं।

अधिक वाणिज्यिक और आर्थिक विकास के साथ सामुदायिक सेवाएं अस्तित्व में आई। इनमें व्यवसायी, क्लर्क, सरकार जैसे लोगों द्वारा की गई सेवाएं शामिल हैं। कर्मचारी, डॉक्टर, शिक्षक, वकील, बैंकर आदि। ये गतिविधियां न तो प्राथमिक हैं क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से उत्पादित वस्तुएं हैं न ही माध्यमिक क्योंकि वे प्राकृतिक उत्पादों के किसी प्रकार के प्रसंस्करण से जुड़े नहीं हैं। इन आर्थिक गतिविधियों को तीन श्रेणियों–तृतीयक, Quarternary और Quinary गतिविधियों के तहत वर्गीकृत किया गया है। तृतीयक गतिविधियों में ''व्यक्तिगत और व्यावसायिक सेवाओं की एक श्रृंखला है, जिसमें श्रम शक्ति का तेजी से बढ़ता हुआ हिस्सा शामिल हैं लिपिक, नाई मताधिकार, सचिव, सभी व्यक्तिगत और व्यावसायिक सेवाओं के वर्गों में आते हैं।

यह विशेष ध्यातव्य है कि विशिष्ट स्थान या जोन की पहचान करना असंभव है जहां विशेष प्राथमिक या माध्यमिक गतिविधियां केंद्रित हैं। लेकिन, किसी विशेष तृतीयक, Quartenary या Quinary गतिविधियों के क्षेत्रों का पता लगाने के लिए यह बहुत मुश्किल या लगभग असंभव है। ऐसी गतिविधियां सामूहिक रूप से मिलती है। उच्च अंतराल अंतरण का कारण ऐसी गतिविधियों के समूह के क्षेत्रों की पहचान करना असंभव है। यह भी स्पष्ट है कि इन गतिविधियों का संचलन मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में केंद्रित हैं। शब्द व्यापार केंद्र केंद्रीय स्थान शहरी स्थान या सेवा केंद्र अक्सर ऐसे क्षेत्रों के लिए उपयोग किया जाता है। यह भी उल्लेखनीय है कि कभी कभी ये गतिविधियां प्राथमिक और माध्यमिक गतिविधियों के साथ भी मिलती हैं।

भूगोल के पारंपरिक दृष्टिकोण का उद्देश्य चीजों और जगहों के बारे में सूचनाओं का संग्रह करना है। आजकल लोगों को व्यवहार दृष्टिकोण को अपनाने में दिलचस्पी हैं। भूगोल का उद्देश्य वर्तमान में मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच संबंधों का विश्लेषण करना है। इस रिश्ते की प्रकृति आर्थिक गतिविधियों और क्षेत्र के आर्थिक विकास के स्तरों में बढ़ी हैं।

आर्थिक वैश्वीकरण के वर्तमान युग में विभिन्न स्थानिक चर का विश्लेषण अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। आर्थिक गतिविधियां भी महत्वपूर्ण स्थानिक चर में से एक हैं। यह विश्लेषण क्षेत्रीय और आर्थिक विकास के उद्देश्य से उचित योजना के लिए आवश्यक हो जाता है।

बैंकिंग सेवा–व्यक्ति की महत्वपूर्ण गतिविधियाँः– वेतनमान स्तर की अर्थव्यवस्था, हर स्तर पर व्यक्तिगत संस्थागत, क्षेत्रीय राष्ट्रीय या वैश्विक मूल रूप से विनिमय

उन्मुख हैं। स्थानीय स्तर पर वस्तुओं का आदान–प्रदान करने के निशान (वस्तु विनिमय प्रणाली) आदिम अर्थव्यवस्थाओं में भी पाया जाता है। वस्तुओं के उस स्थानीय स्तर के आदान प्रदान ने अब एक वैश्विक रूप ले लिया है। अर्थव्यवस्था क्षेत्रीय राष्ट्रीय और अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार के माध्यम से विकसित हो रही है। इन व्यवसायों के विकास में बैंकिंग सेवाएं एक बहुत ही महत्वपूर्ण और अपरिहार्य भूमिका निभाती है कि यह पूंजी से संबंधित है जो कि उत्पादन के तीन मौलिकों में से एक है बाकी दो इसमें श्रम और भूमि है। गुणा और धन का एक कोष बना के पूंजी जुटाना तथा पूंजी का गठन करना इस विशेष चतुर्धातुक गतिविधि का मुख्य कार्य है। यह समुदाय में एक महत्वपूर्ण संस्थागत क्रेडिट एजेंसी का काम करता है तथा संचित धन को सबसे अच्छे और उत्पादक कार्य की दिशा में लगता है। बैंकिंग सेवाएं किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती हैं। वास्तव में किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास और बैंकिंग सेवाओं के बीच एक अन्योन्याश्रित रिश्ता होता है। एक क्षेत्र आर्थिक रूप से तब विकसित करता है जब बैंकिंग सुविधाएं विस्तारित होती है। उस क्षेत्र का आर्थिक विकास बैंकों के विस्तार की भी मांग करता है।

बैंक शब्द एक जर्मन शब्द ''बैंक'' से प्राप्त किया गया है जिसका अर्थ होता है संयुक्त पूंजी कोष। ग्रेट ब्रिटेन में बैंकिंग प्रणाली के निशान 2000 ई.पू. से ही मौजूद हैं जब मंदिरों का इस्तेमाल बैंकों के रूप में किया जाता था। लेकिन ये लंबे समय तक नहीं रहे और कुछ ही समय में विकृत हो गए। बैंकों को एक लंबी अवधि लगी अपने आधुनिक रूप में स्थापित होने में। भारतीय पौराणिक कथाओं में भी बैंकिंग प्रणाली के निशान किसी ना किसी तरह मिल ही जाते हैं। अपने काम की प्रकृति के आधार पर, पूरे समाज को चार जाति समूहों में विभाजित किया गया था। बैंकिंग सेवाएं उस समय उपस्थित थी प्रतिभूतियों और बंधक के एवज में ऋण देने के रूप में। इन कार्यों को करने वाले लोग मुख्य तौर पर वैश्य थे। व्यवस्थित बैंकिंग सेवाओं की शुरुआत हालांकि बैंक ऑफ हिन्दुस्तान के स्थापना के साथ शुरु हुई थी।

संदर्भ–सूचीः–

1. जीबसन, एल.जी. एण्ड अलैक्सेण्डर, जे.डब्लू (1979) ''इकोनॉमिक जोगरफी'',परेनटीस हॉल, इनक. लंदन, पृष्ठ संख्या–7.
2. जीबसन, एल.जी. एण्ड अलैक्सेण्डर, जे.डब्लू (1979) ''इकोनॉमिक जोगरफी'',परेनटीस हॉल, इनक. लंदन, पृष्ठ संख्या–10.
3. गूहा, जे.एल. एण्ड चटरर्जी, पी.ज. (1989) ए न्यू एपरोच टू इकनॉमिक जोगरपफी–ए स्टडी ऑफ रिसोसेस''–द वर्ल्ड प्रेस प्राइवेट. लिमिटेट., कलक्ता, पृष्ठ संख्या–155.
4. हरेटसर्न, टी.ए., अलेक्जेनडर जे. डब्लू (1988)एकनोमिक्स 5.जोगरफी,– परेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्राईवेट लिमिटेट., पृष्ठ संख्या–1.
5. हरेटसर्न, टी.ए., अलेक्जेनडर जे. डब्लू (1988) . एकनोमिक्स जोगरफी,– परेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्राईवेट लिमिटेट., पृष्ठ संख्या–1..
6. आइ.बीड. पृष्ठ संख्या–1.
7. आइ.बीड. पृष्ठ संख्या–1.
8. आइ.बीड. पृष्ठ संख्या–1.
9. बैंकिंग ला एण्ड प्रेक्टीस इन इण्डिया, (1971) . टनन,,एम. एल.,थकरे एण्ड कम्पनी लिमिटेट., बम्बई, पृष्ठ संख्या–2..
10. हैंडबुक ऑन रीजनॉल रूरल बैंक बई आन्नद , एस.सी. एण्ड राम जगत (1990) पृष्ठ संख्या–1.
11. सचम्पीटर, जे.ए. (1951) द थेयूरी ऑफ इकोनॉमिकस डेवेलपमेन्ट, पृष्ठ संख्या–1.
12. गरली, जे.एस., एण्ड सॉ, इ.एस. ''फाइनेन्स असपेक्ट ऑफ इकोनॉमिकस डेवेलपमेन्ट'',द अमेरिकन रेवियू, सितम्बर, 1955, पृष्ठ संख्या–515.
13. ऑल इण्डिया रूरल क्रेडिट सर्वे रिपोर्ट–1951, पृष्ठ संख्या–13.
14. बैंकिंग प्रोफाइल ऑफ बिहार (1991) बैंक ऑफ इंडिया, पृष्ठ संख्या–4.
15. गुरले, जे.एस. (सितम्बर, 1955), दि अमेरिकन रीविव, पृष्ठ संख्या–515.